

# फर्रुखाबाद के पर्यटन स्थलों से सरकार को राजस्व लाभ पर्यटन व्यय, स्थानीय आर्थिक गतिविधि एवं सार्वजनिक राजस्व का विश्लेषण

Harsh Dubey<sup>1</sup>, Dr.Sachin Gupta<sup>2</sup>

Sanskriti University UP<sup>1</sup>

Guide, Sanskriti University, UP<sup>2</sup>

**सारांश:** पर्यटन क्षेत्र क्षेत्रीय आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, स्थानीय व्यापार के विस्तार तथा सार्वजनिक राजस्व में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। फर्रुखाबाद जनपद में धार्मिक, बौद्ध, जैन, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा पारिस्थितिक पर्यटन की विविध संभावनाएँ उपलब्ध हैं। संकिसा, कंपिल, नीव करोरी धाम, पांडवेश्वर नाथ मंदिर, पंचाल घाट, प्राचीन गंगा घाट, कुठिला झील तथा श्री रामनगरिया मेला इस पर्यटन आधार के प्रमुख घटक हैं। जिला प्रशासन के आधिकारिक पर्यटन विवरण के अनुसार इन स्थलों का धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व है तथा कुछ स्थलों पर देश-विदेश से पर्यटक एवं श्रद्धालु आते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य फर्रुखाबाद के पर्यटन स्थलों से सरकार को प्राप्त होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष राजस्व के संभावित स्रोतों का विश्लेषण करना तथा एक जिला-स्तरीय पर्यटन राजस्व आकलन ढाँचा विकसित करना है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों, सरकारी प्रकाशनों, जिला प्रशासन के आधिकारिक अभिलेखों तथा पर्यटन अर्थशास्त्र से संबंधित शोध-साहित्य का उपयोग किया गया है। अध्ययन यह मानता है कि पर्यटन का आर्थिक प्रभाव केवल प्रवेश शुल्क तक सीमित नहीं होता, बल्कि आवास, भोजन, परिवहन, स्थानीय बाजार, धार्मिक सामग्री, पार्किंग, अस्थायी मेले की दुकानें, सेवा शुल्क तथा पर्यटन से उत्पन्न व्यवसायिक गतिविधियों के माध्यम से विस्तृत होता है।

अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि फर्रुखाबाद में पर्यटन से सरकार को होने वाले राजस्व का सही आकलन करने के लिए केवल पर्यटक संख्या पर्याप्त नहीं है। एकीकृत पर्यटन राजस्व सूचना प्रणाली के माध्यम से पर्यटक संख्या, पर्यटक व्यय, आवासीय गतिविधि, स्थानीय व्यापार, शुल्क, कर तथा मेले से संबंधित आर्थिक गतिविधियों को एक साथ मापना आवश्यक है। इस अध्ययन में कोई काल्पनिक या अप्रमाणित राजस्व राशि आधिकारिक आँकड़ों के रूप में प्रस्तुत नहीं की गई है।

**प्रमुख शब्द:** पर्यटन राजस्व, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, विरासत पर्यटन, स्थानीय आर्थिक विकास, सरकारी राजस्व, पर्यटन व्यय, सतत पर्यटन।

## 1. प्रस्तावना

पर्यटन आधुनिक अर्थव्यवस्था का बहुआयामी क्षेत्र है। यह केवल मनोरंजन अथवा यात्रा तक सीमित न रहकर परिवहन, आवास, भोजन, खुदरा व्यापार, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक सेवाओं तथा सार्वजनिक अवसंरचना से जुड़ा हुआ है। इस कारण पर्यटन से उत्पन्न आर्थिक गतिविधि का प्रभाव निजी आय के साथ-साथ सरकारी राजस्व पर भी पड़ता है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन विशेष रूप से उन जनपदों के लिए महत्वपूर्ण है जहाँ बड़े औद्योगिक निवेश की अपेक्षा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संसाधनों का आधार अधिक मजबूत है। फर्रुखाबाद में प्राचीन कंपिल, संकिसा, नीव करोरी धाम, पंचाल घाट तथा श्री रामनगरिया मेला जैसे स्थल धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन की विविधता प्रस्तुत करते हैं।

फर्रुखाबाद जिला प्रशासन के आधिकारिक पर्यटन पोर्टल पर संकिसा, कंपिल, नीव करोरी धाम, पांडवेश्वर नाथ मंदिर, प्राचीन गंगा घाट, कुठिला झील और श्री रामनगरिया मेले को प्रमुख पर्यटन संसाधनों के रूप में प्रदर्शित किया गया है। संकिसा बौद्ध परंपरा से जुड़ा महत्वपूर्ण स्थल है, जबकि कंपिल जैन एवं ऐतिहासिक परंपराओं से संबंधित है। नीव करोरी धाम वर्ष भर श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

श्री रामनगरिया मेला पंचाल घाट पर प्रतिवर्ष आयोजित होता है और धार्मिक गतिविधियों के साथ बाजार, प्रदर्शनियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों का केंद्र बनता है। ऐसी गतिविधियाँ स्थानीय व्यापार को बढ़ाती हैं और विभिन्न स्तरों पर शुल्क तथा कर-आधारित राजस्व की संभावनाएँ उत्पन्न करती हैं।

## 2. समस्या का कथन

फर्रुखाबाद में अनेक पर्यटन संसाधन उपलब्ध होने के बावजूद पर्यटन से सरकार को प्राप्त होने वाले कुल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष राजस्व का एकीकृत जिला-स्तरीय आकलन पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं है। विभिन्न विभागों द्वारा अलग-अलग प्रकार के शुल्क, कर और व्यावसायिक संग्रह किए जाते हैं। इसलिए पर्यटन की वास्तविक राजस्व क्षमता का समग्र मूल्यांकन कठिन हो जाता है।

पर्यटक संख्या का रिकॉर्ड होना अपने आप में पर्यटन के आर्थिक योगदान को नहीं दर्शाता। किसी तीर्थयात्री द्वारा आवास, भोजन, स्थानीय परिवहन, धार्मिक सामग्री और अन्य वस्तुओं पर किया गया व्यय कई आर्थिक लेन-देन उत्पन्न करता है। इन लेन-देन से उत्पन्न कर तथा शुल्क भी पर्यटन के अप्रत्यक्ष राजस्व प्रभाव का हिस्सा हो सकते हैं।

## 3. अध्ययन के उद्देश्य

- फर्रुखाबाद जनपद के प्रमुख पर्यटन संसाधनों की पहचान करना।
- पर्यटन के माध्यम से सरकार को प्राप्त होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष राजस्व स्रोतों का विश्लेषण करना।
- पर्यटक व्यय और स्थानीय आर्थिक गतिविधि के बीच संबंध को समझना।
- पर्यटन आधारित व्यवसायों की संभावित राजस्व भूमिका का अध्ययन करना।
- धार्मिक, सांस्कृतिक, विरासत एवं पारिस्थितिक पर्यटन की आर्थिक भूमिका का विश्लेषण करना।
- फर्रुखाबाद के लिए जिला-स्तरीय पर्यटन राजस्व आकलन ढाँचा विकसित करना।
- राजस्व सृजन के साथ विरासत संरक्षण और सतत पर्यटन के लिए नीति सुझाव प्रस्तुत करना।

## 4. शोध प्रश्न

- फर्रुखाबाद में पर्यटन गतिविधि के प्रमुख स्रोत कौन-कौन से हैं?
- पर्यटन किन प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष माध्यमों से सरकारी राजस्व उत्पन्न कर सकता है?
- पर्यटक व्यय स्थानीय व्यापार एवं कर योग्य आर्थिक गतिविधि को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है?
- पर्यटन संबंधी राजस्व के मापन के लिए कौन-सी संस्थागत व्यवस्था उपयोगी हो सकती है?
- राजस्व सृजन को विरासत एवं पर्यावरण संरक्षण के साथ किस प्रकार संतुलित किया जा सकता है?

## 5. साहित्य समीक्षा

पर्यटन अर्थशास्त्र के साहित्य में पर्यटन को आर्थिक विकास, रोजगार और आय के साथ जोड़कर देखा गया है। पर्यटन व्यय के प्रत्यक्ष प्रभाव के अतिरिक्त अप्रत्यक्ष एवं प्रेरित प्रभाव भी स्थानीय अर्थव्यवस्था में दिखाई दे सकते हैं। पर्यटन उपग्रह लेखा प्रणाली पर्यटन व्यय और व्यापक अर्थव्यवस्था के बीच संबंध को व्यवस्थित रूप से मापने का एक महत्वपूर्ण ढाँचा प्रदान करती है।

उप-राष्ट्रीय अथवा जिला स्तर पर पर्यटन मापन का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि पर्यटन गतिविधियाँ भौगोलिक रूप से केंद्रित होती हैं। स्थानीय स्तर पर पर्यटक प्रवाह, व्यय, व्यवसाय, रोजगार और सरकारी राजस्व को जोड़कर देखने से पर्यटन की वास्तविक आर्थिक भूमिका को अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

भारतीय संदर्भ में भी पर्यटन व्यय, पर्यटन निवेश और आर्थिक विकास के बीच संबंध पर अनेक अध्ययन किए गए हैं। हालाँकि फर्रुखाबाद जैसे विशिष्ट जिले में पर्यटन स्थलों से सरकारी राजस्व के समेकित मूल्यांकन पर अध्ययन की पर्याप्त संभावना दिखाई देती है।

## 6. फरुखाबाद का पर्यटन परिदृश्य

### 6.1 संकिसा

संकिसा जिला मुख्यालय से लगभग 37 किलोमीटर दूर स्थित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं बौद्ध पर्यटन स्थल है। यह बौद्ध परंपरा में विशेष महत्व रखता है और यहाँ विभिन्न देशों से श्रद्धालुओं के आने का उल्लेख जिला प्रशासन करता है। प्राचीन टीला, अशोक स्तंभ तथा विभिन्न बौद्ध मंदिर इसकी विरासत क्षमता को बढ़ाते हैं।

### 6.2 कंपिल

कंपिल प्राचीन कंपिल्य के रूप में जाना जाता है और रामायण, महाभारत तथा जैन परंपराओं से जुड़ा हुआ है। यहाँ श्वेतांबर एवं दिगंबर जैन मंदिर तथा अन्य धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल हैं। धार्मिक आवास, परिवहन, भोजन, स्थानीय बाजार और धार्मिक सामग्री की बिक्री पर्यटन व्यय के संभावित क्षेत्र हैं।

### 6.3 नीव करोरी धाम

नीव करोरी धाम फरुखाबाद का प्रमुख आध्यात्मिक पर्यटन संसाधन है। जिला प्रशासन के अनुसार यहाँ देश-विदेश से श्रद्धालु वर्ष भर आते हैं। ऐसी निरंतर तीर्थयात्री गतिविधि स्थानीय परिवहन, भोजन, आवास, धार्मिक सामग्री और अन्य सेवाओं के लिए मांग उत्पन्न कर सकती है।

### 6.4 पंचाल घाट एवं प्राचीन गंगा घाट

पंचाल घाट फरुखाबाद के प्राचीन गंगा घाटों में प्रमुख है। अन्य घाटों के साथ यह क्षेत्र धार्मिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जिला प्रशासन के अनुसार ऐतिहासिक काल में गंगा के ये घाट व्यापारिक गतिविधियों से भी जुड़े रहे हैं।

### 6.5 श्री रामनगरिया मेला

श्री रामनगरिया मेला माघ मास में पंचाल घाट पर प्रतिवर्ष आयोजित होता है। जिला प्रशासन के अनुसार यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु कल्पवास करते हैं तथा बाजार, विकास प्रदर्शनियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, साहित्यिक सभाएँ और आध्यात्मिक गतिविधियाँ आयोजित होती हैं। इस कारण यह धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ अस्थायी व्यापार और सेवा गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र बनता है।

### 6.6 कुठिला झील

कुठिला झील अमृतपुर के निकट स्थित पारिस्थितिक पर्यटन स्थल है। यह प्राकृतिक सौंदर्य और प्रवासी पक्षियों के कारण पर्यटन की संभावनाएँ रखती है। सतत विकास के सिद्धांतों के अंतर्गत यहाँ प्रकृति-आधारित पर्यटन सेवाओं का विकास किया जा सकता है।

## 7. वैचारिक ढाँचा

प्रस्तावित पर्यटन-राजस्व मॉडल को निम्न क्रम में समझा जा सकता है:

पर्यटन संसाधन → पर्यटक/तीर्थयात्री आगमन → पर्यटक व्यय → आवास + भोजन + परिवहन + खुदरा + धार्मिक सेवाएँ → व्यवसायिक कारोबार → रोजगार एवं आय → कर योग्य आर्थिक गतिविधि → सरकारी राजस्व

## 8. पर्यटन से सरकारी राजस्व के प्रमुख स्रोत

| राजस्व चैनल          | संभावित स्रोत                                   |
|----------------------|-------------------------------------------------|
| प्रवेश/उपयोग शुल्क   | पर्यटन सुविधाएँ एवं आकर्षण                      |
| पार्किंग शुल्क       | पर्यटन स्थलों एवं मेलों में वाहन व्यवस्था       |
| आवास संबंधी कर       | होटल, गेस्ट हाउस एवं अन्य आवासीय सेवाएँ         |
| वस्तु एवं सेवा कर    | कर योग्य पर्यटन उपभोग                           |
| व्यावसायिक लाइसेंस   | पर्यटन से जुड़े व्यवसाय                         |
| स्थानीय शुल्क        | बाजार, अस्थायी दुकानें एवं वाणिज्यिक गतिविधियाँ |
| परिवहन संबंधी संग्रह | पर्यटक परिवहन एवं संबद्ध सेवाएँ                 |
| मेला/कार्यक्रम शुल्क | अस्थायी व्यावसायिक एवं आयोजन गतिविधियाँ         |

|                       |                                                |
|-----------------------|------------------------------------------------|
| संपत्ति आधारित राजस्व | पर्यटन से प्रेरित वाणिज्यिक विकास              |
| पंजीकरण एवं अनुपालन   | पर्यटन उद्यमों से संबंधित प्रशासनिक गतिविधियाँ |

### 9. अनुसंधान पद्धति

अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान डिजाइन पर आधारित है। मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। आधिकारिक जिला प्रशासन पोर्टल, भारत सरकार के पर्यटन संबंधी प्रकाशन, उत्तर प्रदेश से संबंधित पर्यटन सूचनाएँ तथा पर्यटन अर्थशास्त्र के शोध-साहित्य को आधार बनाया गया है।

जहाँ जिला-स्तरीय सत्यापित राजस्व राशि उपलब्ध नहीं है, वहाँ अनुमानित राशि को आधिकारिक आँकड़ों के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह पद्धति शोध की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

### 10. पर्यटन राजस्व का विश्लेषणात्मक मॉडल

कुल पर्यटन-संबंधी सरकारी राजस्व (TR) = प्रत्यक्ष राजस्व (DR) + अप्रत्यक्ष कर-संबंधी राजस्व (IR) + शुल्क/नियामक राजस्व (FR)

प्रत्यक्ष राजस्व (DR) = प्रवेश/उपयोग शुल्क + पार्किंग शुल्क + सेवा शुल्क + मेला/कार्यक्रम शुल्क

अप्रत्यक्ष राजस्व का अनुमान केवल सत्यापित कर योग्य पर्यटन व्यय और लागू प्रभावी कर दर उपलब्ध होने पर किया जाना चाहिए।

### 11. पर्यटन व्यय और राजस्व गुणक

पर्यटन का आर्थिक प्रभाव किसी एक स्थल पर प्राप्त शुल्क से कहीं अधिक व्यापक हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक तीर्थयात्री नीव करोरी धाम जाता है तो वह परिवहन, भोजन, आवास, धार्मिक सामग्री तथा स्थानीय वस्तुओं पर व्यय कर सकता है। इन गतिविधियों से अनेक स्थानीय व्यवसायों का कारोबार बढ़ता है और संबंधित कर एवं शुल्क के माध्यम से सरकारी राजस्व का आधार विस्तृत हो सकता है।

### 12. स्थानीय आर्थिक विकास पर प्रभाव

#### 12.1 आवास

पर्यटकों की संख्या बढ़ने पर होटल, धर्मशाला, गेस्ट हाउस और होम-स्टे जैसी सेवाओं की मांग बढ़ सकती है।

#### 12.2 भोजन सेवाएँ

रेस्तराँ, स्थानीय भोजन, चाय-दुकान और अन्य खाद्य सेवाओं में पर्यटन आधारित मांग उत्पन्न होती है।

#### 12.3 परिवहन

बस, टैक्सी, ऑटो, ई-रिक्शा और निजी वाहन सेवाएँ पर्यटन प्रवाह से लाभान्वित हो सकती हैं।

#### 12.4 खुदरा व्यापार

धार्मिक सामग्री, स्मृति-चिह्न, हस्तशिल्प और स्थानीय उत्पादों की बिक्री बढ़ सकती है।

#### 12.5 रोजगार

पर्यटन प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से स्थानीय रोजगार के अवसर उत्पन्न कर सकता है।

#### 12.6 सरकारी राजस्व

पर्यटन व्यवसायों के विस्तार से कर एवं शुल्क आधारित सार्वजनिक राजस्व का आधार बढ़ सकता है।

### 13. प्रमुख पर्यटन स्थलों का पर्यटन-राजस्व विश्लेषण

| स्थल   | पर्यटन प्रकार      | मुख्य व्यय गतिविधियाँ              | राजस्व प्रासंगिकता                                      |
|--------|--------------------|------------------------------------|---------------------------------------------------------|
| संकिसा | बौद्ध/विरासत       | आवास, परिवहन, भोजन, धार्मिक सेवाएँ | विरासत पर्यटन एवं अंतरराष्ट्रीय तीर्थ पर्यटन की संभावना |
| कंपिल  | जैन/धार्मिक/विरासत | धार्मिक सेवाएँ, आवास, खुदरा        | धार्मिक पर्यटन आधारित स्थानीय आर्थिक गतिविधि            |

|                  |                    |                                             |                                          |
|------------------|--------------------|---------------------------------------------|------------------------------------------|
| नीव करोरी धाम    | आध्यात्मिक         | परिवहन, भोजन, आवास, खुदरा                   | वर्ष भर तीर्थयात्री व्यय की संभावना      |
| पंचाल घाट        | धार्मिक/नदी पर्यटन | परिवहन, भोजन, धार्मिक गतिविधियाँ            | वर्ष भर एवं मौसमी आर्थिक गतिविधि         |
| रामनगरिया मेला   | धार्मिक/सांस्कृतिक | अस्थायी बाजार, भोजन, आवास, परिवहन           | मौसमी व्यावसायिक गतिविधि की उच्च संभावना |
| कुठिला झील       | पारिस्थितिक पर्यटन | स्थानीय परिवहन, भोजन, प्रकृति-आधारित सेवाएँ | उभरता हुआ ईको-टूरिज्म क्षेत्र            |
| प्राचीन गंगा घाट | विरासत/धार्मिक     | तीर्थ, स्थानीय व्यापार                      | विरासत-आधारित पर्यटन संभावना             |

#### 14. प्रमुख निष्कर्ष

- फरुखाबाद में धार्मिक, बौद्ध, जैन, ऐतिहासिक, नदी एवं पारिस्थितिक पर्यटन का विविध आधार उपलब्ध है।
- पर्यटन से सरकारी राजस्व केवल प्रवेश शुल्क से नहीं, बल्कि कर, स्थानीय शुल्क, पार्किंग, व्यवसायिक गतिविधियों और पर्यटन-प्रेरित आर्थिक लेन-देन से भी जुड़ सकता है।
- धार्मिक पर्यटन में निःशुल्क प्रवेश होने पर भी आवास, भोजन, परिवहन और खुदरा व्यय के माध्यम से आर्थिक गतिविधि उत्पन्न होती है।
- श्री रामनगरिया मेला धार्मिक पर्यटन और अस्थायी व्यापारिक गतिविधियों के बीच महत्वपूर्ण संबंध का उदाहरण है।
- संकिसा में बौद्ध विरासत के कारण देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए विशेष पर्यटन संभावना है।
- कुठिला झील प्रकृति-आधारित एवं सतत पर्यटन के लिए अवसर प्रदान करती है।
- फरुखाबाद में पर्यटन से संबंधित राजस्व का एकीकृत जिला-स्तरीय डेटाबेस विकसित किया जाना उपयोगी होगा।

#### 15. नीति सुझाव

- फरुखाबाद पर्यटन राजस्व डैशबोर्ड विकसित किया जाए।
- पर्यटक संख्या के लिए डिजिटल काउंटिंग एवं QR-आधारित पंजीकरण प्रणाली अपनाई जाए।
- पर्यटन विभाग, स्थानीय निकाय, परिवहन, कर प्रशासन और मेला प्रबंधन के बीच डेटा समन्वय विकसित किया जाए।
- संकिसा, कंपिल, नीव करोरी धाम और पंचाल घाट को जोड़कर पर्यटन सर्किट विकसित किए जाएँ।
- स्थानीय उद्यमियों को आवास, भोजन, गाइड, हस्तशिल्प और परिवहन सेवाओं में शामिल किया जाए।
- पर्यटन विकास में पर्यावरणीय वहन क्षमता और विरासत संरक्षण को अनिवार्य घटक बनाया जाए।
- पर्यटन से होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष राजस्व की वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित की जाए।

#### 16. सतत पर्यटन एवं राजस्व सृजन

पर्यटन राजस्व में वृद्धि को पर्यटन नीति का एकमात्र उद्देश्य नहीं बनाया जाना चाहिए। अत्यधिक व्यावसायीकरण से ऐतिहासिक स्थलों, धार्मिक परिसरों और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव पड़ सकता है। अतः पर्यटन नीति का आधार राजस्व सृजन, विरासत संरक्षण, पर्यावरणीय सुरक्षा और स्थानीय समुदाय के लाभ के बीच संतुलन होना चाहिए।

#### 17. अध्ययन की सीमाएँ

अध्ययन की प्रमुख सीमा यह है कि प्रत्येक पर्यटन स्थल से प्राप्त वास्तविक, लेखा-परीक्षित, वर्षवार सरकारी राजस्व का समेकित सार्वजनिक डेटाबेस उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त अनौपचारिक पर्यटन व्यय का मापन कठिन है तथा पर्यटन से संबंधित कई प्रशासनिक प्रणालियों के माध्यम से एकत्र हो सकते हैं। इसलिए अध्ययन में अप्रमाणित राजस्व राशि को तथ्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

## 18. भविष्य के अनुसंधान की दिशा

भविष्य के अध्ययन में 2015-2025 या उपलब्ध नवीनतम अवधि के लिए पर्यटक आगमन, आवासीय क्षमता, पर्यटक व्यय, पर्यटन व्यवसाय, मेला गतिविधि तथा विभागीय राजस्व के सत्यापित आँकड़ों को एकत्र किया जा सकता है। इन आँकड़ों के आधार पर सहसंबंध, प्रतिगमन, समय-श्रृंखला या संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग जैसी मात्रात्मक तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है।

## 19. निष्कर्ष

फर्रुखाबाद धार्मिक, बौद्ध, जैन, ऐतिहासिक, नदी तथा पारिस्थितिक पर्यटन संसाधनों वाला महत्वपूर्ण जनपद है। संकिसा, कंपिल, नीव करोरी धाम, पंचाल घाट, प्राचीन गंगा घाट, कुठिला झील तथा श्री रामनगरिया मेला पर्यटन गतिविधि के विविध आधार प्रस्तुत करते हैं।

पर्यटन से सरकार को होने वाला राजस्व केवल प्रत्यक्ष शुल्क तक सीमित नहीं है। पर्यटक व्यय से आवास, भोजन, परिवहन, खुदरा व्यापार, धार्मिक सेवाओं और अन्य स्थानीय व्यवसायों में कारोबार उत्पन्न होता है। इन गतिविधियों के विस्तार से कर योग्य आर्थिक आधार तथा विभिन्न सार्वजनिक शुल्कों की संभावनाएँ बढ़ सकती हैं।

अतः फर्रुखाबाद में पर्यटन के आर्थिक प्रभाव का आकलन एकीकृत जिला-स्तरीय पर्यटन राजस्व प्रणाली के माध्यम से किया जाना चाहिए। डिजिटल पर्यटक मापन, पर्यटन व्यवसाय पंजीकरण, विभागीय डेटा समन्वय, पर्यटन सर्किट विकास तथा पारदर्शी राजस्व लेखांकन से पर्यटन नीति को अधिक साक्ष्य-आधारित बनाया जा सकता है।

## संदर्भ सूची

- [1]. फर्रुखाबाद जिला प्रशासन। (2026). फर्रुखाबाद पर्यटन। उत्तर प्रदेश सरकार/राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र।
- [2]. फर्रुखाबाद जिला प्रशासन। (2026). रुचि के स्थान एवं पर्यटन स्थल। उत्तर प्रदेश सरकार/राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र।
- [3]. फर्रुखाबाद जिला प्रशासन। (2026). श्री रामनगरिया मेला। उत्तर प्रदेश सरकार/राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र।
- [4]. फर्रुखाबाद जिला प्रशासन। (2026). संकिसा। उत्तर प्रदेश सरकार/राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र।
- [5]. फर्रुखाबाद जिला प्रशासन। (2026). कंपिल। उत्तर प्रदेश सरकार/राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र।
- [6]. फर्रुखाबाद जिला प्रशासन। (2026). नीव करोरी धाम। उत्तर प्रदेश सरकार/राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र।
- [7]. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय। India Tourism Data Compendium. नवीनतम उपलब्ध संस्करण।
- [8]. UN Tourism. Tourism Satellite Account तथा पर्यटन के आर्थिक प्रभाव के मापन संबंधी प्रकाशन।
- [9]. UN Tourism. Sub-national Tourism Measurement and Analysis संबंधी दिशानिर्देश।